उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल
Institute for Excellence in Higher Education, Bhopal

Guidelines for the Project-Work/Internship/Apprenticeship *and* Research-Project
परियोजना–कार्य / शिक्षुता / प्रशिक्षुता *एवं* अनुसंधान–परियोजना के संचालन हेतु निर्देश

(Applicable only for undergraduate VII[th] & VIII[th] Semester students, *w.e.f.* Session 2024-2025)

1. प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में मध्यप्रदेश शासन द्वारा जारी अध्यादेश क्रमांक 14(A), पत्र क्रमांक 316 / 43 / 2024 / अड़तीस भोपाल दिनांक 20 / 5 / 2024 एवं पत्र क्रमांक 1433 / 408 / आउशि / अकादमी / 2024 भोपाल दिनांक 27 / 08 / 2024 के परिपालन में यह दिशानिर्देश जारी किए जा रहे हैं। संस्थान में **स्नातक चतुर्थ वर्ष** में विद्यार्थियों को निम्नानुसार प्रवेश प्रदान किया गया है:

(अ) **स्नातक चतुर्थ वर्ष (आनर्स)**: स्नातक तृतीय वर्ष 120 क्रेडिट एवं 7.5 से कम सी.जी.पी.ए. के साथ उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को मेजर विषय के स्नातक चतुर्थ वर्ष (आनर्स) पाठयक्रम में प्रवेश दिया गया है।

(ब) **स्नातक चतुर्थ वर्ष (आनर्स विथ रिसर्च)**: स्नातक तृतीय वर्ष 120 क्रेडिट एवं 7.5 से अधिक सी.जी.पी.ए. के साथ उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को मेजर विषय के स्नातक चतुर्थ वर्ष (आनर्स विथ रिसर्च) पाठयक्रम में प्रवेश दिया गया है।

उपरोक्तानुसार प्रवेशित विद्यार्थियों को स्नातक चतुर्थ वर्ष में मेजर विषय के साथ रिसर्च मैथेडोलॉजी, परियोजना–कार्य / शिक्षुता / प्रशिक्षुता अथवा अनुसंधान–परियोजना अंतर्गत निम्नानुसार क्रेडिट अर्जित करने होगें:

B.A., B.Sc., B.Com., B.B.A. and B.P.E.S. IV[th] Year

Sem	Subject-I	Subject-II	Subject-III	Project
VII	**Major** (6 Credit)	**DSE** (4 Credit)	**Research Methodology** (4 Credit) Common for all faculties	(A) For Honours Degree **Project-Work/ Internship/Apprenticeship** (परियोजना–कार्य / शिक्षुता / प्रशिक्षुता) (6 Credit) ***OR*** (B) For Honours with Research Degree **Research Project** (अनुसंधान परियोजना) (6 Credit)
VIII	**Major** (6 Credit)	-	(A) For Honours Degree **Dissertation based on major subject** (4 Credit) ***OR*** (B) For Honours with Research Degree **Research Technique & Case Study** (4 Credit)	(A) For Honours Degree **Project-Work/ Internship/Apprenticeship** (परियोजना–कार्य / शिक्षुता / प्रशिक्षुता) (10 Credit) ***OR*** (B) For Honours with Research Degree **Research Project** (अनुसंधान परियोजना) (10 Credit)

2. 'ऑनर्स' अथवा 'ऑनर्स विथ रिसर्च' प्रोग्राम का संचालन

(i) संस्थान के विभाग जिनमें अध्यादेश 14(A) के अंतर्गत अकादमिक प्रोग्राम संचालित है, उन सभी विभागों में चार वर्षीय **स्नातक (ऑनर्स)** कार्यक्रम संचालित किये जा सकते हैं।

(ii) संस्थान के ऐसे विभाग जो बरकतउल्ला विश्वविद्यालय के शोधकेन्द्र के रूप में अधिसूचित है, वे सभी विभाग **स्नातक (ऑनर्स)** के साथ–साथ स्नातक स्तर पर चार वर्षीय **स्नातक (ऑनर्स विथ रिसर्च)** कार्यक्रम का संचालन भी कर सकते है। परन्तु विद्यार्थी को आनर्स विथ रिसर्च में प्रवेश के लिए स्नातक तृतीय वर्ष सी.जी.पी.ए. 7.5 से अधिक के साथ उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। ऐसे विद्यार्थियों के पास यह विकल्प होगा कि यदि वे चाहें तो **स्नातक (ऑनर्स)** प्रोग्राम को चुन सकते है।

(iii) संस्थान के समस्त विभाग उपरोक्तानुसार चतुर्थ वर्ष में प्रवेशित विद्यार्थियों की सूची तैयार करेंगे। सूची तैयार करते समय ऑनर्स विथ रिसर्च की पात्रता रखने वाले समस्त विद्यार्थियों से निर्धारित प्रारूप में विकल्प पत्र अवश्य प्राप्त करें।

3. 'ऑनर्स' प्रोग्राम अंतर्गत परियोजना कार्य (Project Work)

नवीन अकादमिक संरचना में परियोजना कार्य एक महत्वपूर्ण अंग है। परियोजना कार्य आधारित शिक्षण, विद्यार्थी के व्यक्तिगत अथवा समूह में रहकर गतिविधियों का संयोजन है जिससे विद्यार्थी फील्ड–स्टडी के माध्यम से न सिर्फ अनुसंधान करना सीखता है अपितु समूह में एक साथ घनिष्ठ रूप में कार्य करना भी सीखता है। संस्थान के बाहर के फील्ड–स्टडी/केस–स्टडी के अनुभव विद्यार्थियों के लिए अमूल्य है। परियोजना कार्य के माध्यम से विद्यार्थियों में समूह गतिविधियों के अलावा स्वप्रबंधन, लोकतांत्रिक राय निर्माण, सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता में अभिवृद्धि होती है।

परियोजना कार्य में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक के द्वारा विद्यार्थियों को दिये जाने वाले मार्गदर्शन के द्वारा, शिक्षकों में भी परियोजना पर कार्य करने की प्रवृत्ति, विषय में अंर्तदृष्टि और समस्याओं को समझने एवं उनके निराकरण का कौशल विकसित होता है। परियोजना कार्य की विशेषता है कि इसमें शामिल सभी लोग एक–दूसरे से सीखते हैं। शिक्षक का दायित्व है कि वह विद्यार्थियों के साथ अकादमिक संवाद स्थापित करें, विषय से संबंधित प्रमुख मुद्दों पर सोचने एवं प्रश्न करने की प्रवृत्ति विकसित करें तथा उनके उत्तर प्राप्त करने के लिये उपयुक्त शोध–प्रविधियों को अपनाने के सुझाव दे तथा विद्यार्थियों द्वारा किये गये कार्यों की सतत् समीक्षा करेंगे।

(क) परियोजना कार्य हेतु विषय का चयन

परियोजना कार्य में विषय का चयन अत्यधिक महत्वपूर्ण है। विषय/शीर्षक चयन में, विद्यार्थियों की विषय विशेष में रूचि को आधार मानकर, परियोजना की उपादेयता को ध्यान में रखते हुए विषय आवंटन करना चाहिए। परियोजना कार्य न ही बहुत व्यापक हो, न ही बहुत सीमित हो, अर्थात नियत समयावधि में विद्यार्थी इसे पूर्ण कर सकें।

परियोजना कार्य के विषय का व्यक्तिगत एवं सामाजिक महत्व भी होना चाहिए, तथा यह एक शोध विषय के रूप में अनुसंधान को प्रेरित करने वाला हो। शिक्षक यह सुनिश्चित करें कि परियोजना कार्य के विषय के चयन हेतु Learing Outcomes इस प्रकार निर्धारित किये जाए जो प्राप्ति योग्य हों तथा जिनके आधार पर प्राप्त ज्ञान एवं कौशल का मापन व अवलोकन (Measurable & Observable) स्पष्टता के साथ किया जा सके।

परियोजना कार्य को संस्थान के उपलब्ध संसाधनों यथा लाईब्रेरी, इंटरनेट, ऑडियो विजुअल सामग्री तथा संस्थान के बाहर फील्ड–वर्क/केस–स्टडी इत्यादि के माध्यम से संस्थान में उपलब्ध सुविधाओं अथवा अन्य संस्थान के साथ किए गए MOU आदि के आधार पर पूर्ण किया जाना चाहिए। सातवें एवं आठवें सेमेस्टर में परियोजना कार्य क्रमशः 6 एवं 10 क्रेडिट का होगा।

(ख) **परियोजना कार्य हेतु निर्देश**

- परियोजना कार्य सामान्य रूप से विषय से संबंधित विद्यार्थियों के समूह बनाकर उन्हें आवंटित किये जायें। समूह में विद्यार्थियों की संख्या परियोजना कार्य की प्रकृति एवं आवश्यकता के अनुरूप रखी जा सकती है समूह में विद्यार्थियों की संख्या अधिकतम 03 हो सकती है। एडवांस लर्नर विद्यार्थी को व्यक्तिगत/एकल रूप से भी परियोजना कार्य आवंटित किया जा सकता है।
- विद्यार्थी/विद्यार्थी–समूह को फील्ड–वर्क आधारित परियोजना कार्य में विद्यार्थी को न्यूनतम 07 पूर्ण दिवस अथवा 15 दिवस अंशकालीन (पार्ट–टाइम) फील्ड वर्क करना अनिवार्य है। यदि वह मान्यता प्राप्त संस्था से यह कार्य कर रहा है तो उस संस्था का प्रमाण–पत्र अथवा फील्ड–वर्क के साक्ष्य जियोटैग फोटो के रूप में रिपोर्ट में प्रस्तुत करना होगा।
- परियोजना रिपोर्ट न्यूनतम 5000 शब्दों में प्रस्तुत करना होगी। प्रोजेक्ट रिपोर्ट में आवश्यकतानुसार, चार्ट, ग्राफ, जियोटैग फोटोग्राफ आदि का प्रयोग करना आवश्यक है।
- परियोजना कार्य में समूह में शामिल सभी विद्यार्थियों की भूमिका एवं उत्तरदायित्व का उल्लेख परियोजना प्रविधि में किया जाना आवश्यक होगा। संबंधित शिक्षक ये सुनिश्चित करेंगे कि प्रत्येक 15 दिवस पर, विद्यार्थी समूह की बैठक आयोजित कर निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिये विद्यार्थी समूह द्वारा किये गये प्रयासों की समीक्षा करेंगे।
- परियोजना कार्य किसी भी रूप में नकल पर आधारित नहीं होगा। विद्यार्थी/विद्यार्थियों को स्वविवेक से उपलब्ध संसाधनों के आधार पर परियोजना कार्य को पूर्ण करना होगा। विद्यार्थी/विद्यार्थियों को यह प्रमाण–पत्र भी रिपोर्ट के साथ देना होगा कि प्रस्तुत परियोजना रिपोर्ट उनका मौलिक कार्य है। परियोजना कार्य एक सेमेस्टर की अवधि में पूर्ण किया जाना है, परंतु किसी भी स्थिति में विद्यार्थी को संस्था के अकादमिक कैलेण्डर में परीक्षा परिणाम घोषणा की पूर्व निर्धारित तिथि से 15 दिवस पूर्व इसे पूर्ण करना अनिवार्य है।

(ग) **परियोजना कार्य का मूल्यांकन**

- परियोजना कार्य का उद्देश्य विद्यार्थियों में विषय से संबंधित प्रमुख बिन्दुओं पर रचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करना है। प्रत्येक विद्यार्थी/विद्यार्थी–समूह, परियोजना की निर्धारित अवधि के अंत में परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे, जिसका मूल्यांकन नियमानुसार किया जायेगा।
- मूल्यांकनकर्ता ये सुनिश्चित करेंगे कि परियोजना कार्य में निर्धारित आवश्यक चरणों का समावेश किया गया है तथा परियोजना कार्य द्वारा पूर्व निर्धारित Learning Outcomes प्राप्त कर लिए गए हैं।
- विद्यार्थी/विद्यार्थी–समूह द्वारा रिपोर्ट का प्रस्तुतिकरण भी किया जायेगा, जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी की निर्धारित भूमिका एवं उसके द्वारा किये गये कार्य निष्पादन का मूल्यांकन किया जायेगा।

- विद्यार्थी/विद्यार्थी–समूह को 20–20 दिवसों के अन्तराल में न्यूनतम तीन प्रगति प्रतिवेदन निर्धारित प्रारूप–P1, P2, P3 में देना होगें जिसके आधार पर संबंधित शिक्षक सतत् मूल्यांकन का कार्य करेंगे।

- सतत् मूल्यांकन के अतिरिक्त परियोजना कार्य की अंतिम रिपोर्ट प्रारूप–P4 में जमा करने के पश्चात परियोजना कार्य का परीक्षा शाखा द्वारा नामित बाह्य–परीक्षक की उपस्थिति में प्रस्तुतिकरण एवं मौखिकी परीक्षा होगी। अंको का विभाजन आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन हेतु क्रमशः 50 एवं 50 अंकों का होगा।

  (अ) आंतरिक मूल्यांकन (50 अंक) हेतु विद्यार्थी/विद्यार्थी–समूह निर्धारित प्रारूप में तीन प्रगति प्रतिवेदन, निश्चित अंतराल पर प्रस्तुत करेगा। आंतरिक मूल्यांकन हेतु तीनों प्रतिवेदनों में से, दो श्रेष्ठ प्रतिवेदनों में प्राप्त अंकों की गणना की जायेगी।

  (ब) बाह्य मूल्यांकन (50 अंक) का विभाजन निम्नानुसार होगाः

    - 30 अंक – अंतिम प्रोजेक्ट रिपोर्ट एवं प्रस्तुतिकरण (व्यक्तिगत/सामूहिक)
    - 20 अंक – मौखिकी (व्यक्तिगत)

4. 'ऑनर्स' प्रोग्राम अंतर्गत शिक्षुता/प्रशिक्षुता हेतु निर्देश

मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन अंतर्गत स्नातक स्तरीय पाठयक्रम में लागू नवीन पाठयक्रम संरचना में शिक्षुता अथवा प्रशिक्षुता के पाठयक्रम का समावेश किया गया है। सातवें एवं आठवें सेमेस्टर में क्रमशः 6 एवं 10 क्रेडिट का कार्य पृथक–पृथक करना होगा।

इनमें से किसी एक विधा का चयन कर प्रशिक्षण/अध्ययन करना अनिवार्य है। विद्यार्थी को संस्थान में उपस्थित होकर प्रशिक्षुता और शिक्षुता की मूल अवधारणा का परिचय प्राप्त करना होगा।

पाठयक्रम के चुनाव एवं अन्य जानकारी के लिए संस्थान में प्रत्येक सेमेस्टर में एक/दो दिवसीय प्रेरण (इंडक्शन) कार्यक्रम आयोजित होगा, जिसमें विद्यार्थी की प्रतिभागिता अनिवार्य होगी। प्रेरण कार्यक्रम में प्रत्येक प्रकार की पाठयक्रम की संकल्पना, उसकी विशेषता के साथ विभिन्न प्रपत्रों एवं मूल्यांकन पद्धतियों से विद्यार्थियों को अवगत कराया जायेगा।

प्रेरण (इंडक्शन) कार्यक्रम के उपरांत विद्यार्थी को अपनी रूचि के अनुसार शिक्षुता अथवा प्रशिक्षुता का विकल्प देना होगा। अभिरूचि, वरीयता क्रम व उपलब्धता के आधार पर शिक्षक–पर्यवेक्षक, विद्यार्थियों के लिए गतिविधि नियत करेंगे। शिक्षक आवश्यकतानुसार तथा विद्यार्थियों की रूचि के अनुकूल उन्हें कार्य करने की अनुमति देंगे, विशेष परिस्थितियों में यदि कोई विद्यार्थी अपने चयनित विषयों के अतिरिक्त अन्य किसी विषय से संबंधित क्षेत्र में कार्य करना चाहता है तो उसे इस कार्य की उपयोगिता, प्रासंगिता एवं औचित्य का उल्लेख करते हुए संस्थान के संचालक से टीप सहित विशेष अनुमति प्राप्त करना अनिवार्य होगा।

प्रबंधन एवं संचालनः

इन घटकों के गुणवत्ता प्रबंधन एवं सुचारू संचालन को सुनिश्चित करना संबंधित विभाग की जिम्मेदारी होगी। विभाग के शिक्षक–पर्यवेक्षक, संस्थान में गठित कौशल संवर्धन डेस्क के निर्देशन में कार्य करेंगे। यह भी सुनिश्चित किया जाएगा कि विद्यार्थियों की संख्या के अनुरूप समूह निर्धारण कर प्रत्येक शिक्षक–पर्यवेक्षक को आवंटित किया जाए तथा संबंधित शिक्षक इन विद्यार्थियों की पाठयक्रम संबंधी समस्याओं का निराकरण करें। शिक्षक–पर्यवेक्षक की भूमिका एक उत्प्रेकरण एवं सूत्रधार की होगी जो

कार्य के लिए विद्यार्थी को पाठयक्रम की गुणवत्ता सुनिश्चित करते हुए शिक्षुता अथवा प्रशिक्षुता कार्य को पूर्ण करने में सहायता करेंगे।

- शिक्षक–पर्यवेक्षक के दायित्व में, विद्यार्थी को कार्य आवंटित करना, आवश्यक मार्गदर्शन तथा उसके द्वारा किये जा रहे कार्य की अद्यतन जानकारी का समुचित रिकार्ड अपने पास रखना और आंतरिक मूल्यांकन करना सम्मिलित होगा।

- गतिविधि के प्रथम चरण में विद्यार्थी अपनी रूचि के अनुरूप शिक्षक पर्यवेक्षक की सहायता से शिक्षुता/प्रशिक्षुता गतिवधि के अंतर्गत कार्य करने के लिए लोगों से चर्चा कर, साहित्य, इन्टरनेट आदि की सहायता से विषय का प्रारंभिक चुनाव करेंगे। विद्यार्थी को मान्यता प्राप्त फर्म/संस्थान/व्यक्ति (आर्टिस्ट) के सहयोग से यह गतिविधि पूर्ण करना होगी।

- किसी भी गतिविधि के अंतर्गत कार्य करने की स्थिति में विद्यार्थी को शिक्षक–पर्यवेक्षक के सतत् सक्रिय संपर्क में रहकर नियमित रिपोर्टिंग करना अनिवार्य है, इसके लिए विद्यार्थी द्वारा एक वर्किंग–नोटबुक/डायरी का संधारण किया जायेगा जिसमें अध्ययन, सर्वे, प्रोजेक्ट, डाटा, मार्गदर्शक के साथ चर्चा, नोट्स, आदि अंकित होंगे। इस पर शिक्षक–पर्यवेक्षक के समय–समय पर निरीक्षण के हस्ताक्षर होंगे तथा यह वर्किंग–नोटबुक, विद्यार्थी द्वारा अंतिम अध्ययन रिपोर्ट के साथ मूल्यांकन के लिए विषय पर्यवेक्षक के पास जमा की जाएगी।

- **अनुमति हेतु प्रक्रिया:** किसी बाह्य पंजीकृत प्रतिष्ठित मान्य संस्था/फर्म/व्यक्ति (आर्टिस्ट) के साथ शिक्षुता/प्रशिक्षुता का कार्य करने के लिए संस्थान के संचालक की लिखित पूर्व अनुमति लेना आवश्यक होगा, संचालक महोदय सहभागी संस्थान की गुणवत्ता एवं अन्य आवश्यक विवरणों से व्यक्तिगत रूप से संतुष्ट होने पर ही ऐसी अनुमति जारी कर सकेंगे। इस हेतु प्रक्रिया निम्नानुसार होगी:
    - निर्दिष्ट बाह्य संस्था की जानकारी एवं सहमति प्राप्त करने के लिए शिक्षक–पर्यवेक्षक तथा संचालक द्वारा हस्ताक्षरित एक अनुरोध पत्र (प्रारूप–G1) संस्था को दिया जाए।
    - संस्था द्वारा निर्धारित प्रारूप–G2 में अपेक्षित अधिकतम विद्यार्थी संख्या का उल्लेख करते हुए सहमति–पत्र प्रदान किया जायेगा।
    - प्रारूप–G3 में संस्थान द्वारा संस्था को विद्यार्थियों की सूची सहित औपचारिक अनुरोध प्रेषित किया जाएगा, जिसमें यह स्पष्ट उल्लेख होगा कि इस सहयोग के लिए संबंधित बाह्य संस्था, विद्यार्थियों अथवा संस्थान से कोई शुल्क नहीं ले सकेंगे। साथ ही संस्थान को प्रारूप–G4 के अनुसार एक प्रतिपुष्टि–पत्र (Feedback Form) भी संलग्न कर भेजा जाएगा जिसमें विद्यार्थियों का संबंधित संस्था द्वारा मूल्यांकन किया जाएगा।

टीप: निर्देश के अंत में, सभी प्रारूप और उनके आवश्यकतानुसार विवरण, अनुलग्नक (प्रारूप) के रूप में दिए गए हैं, सभी प्रारूप केवल सुझावात्मक तथा उदाहरण मात्र हैं अर्थात कार्य की आवश्यकता और संदर्भ के अनुसार उनमें आवश्यक परिवर्तन किये जा सकते हैं।

प्रशिक्षुता (Internship) एवं शिक्षुता (Apprenticeship) हेतु सामान्य निर्देश

प्रदेश के विद्यार्थियों को सैद्धांतिक ज्ञान के साथ–साथ व्यावसायिक व व्यावहारिक ज्ञान देने के लिए नवीन अकादमिक संरचना में शिक्षुता/प्रशिक्षुता एक प्रमुख अवयव है। प्रशिक्षुता एवं शिक्षुता पाठयक्रम को विद्यार्थी किसी संस्था/फर्म/व्यावसायिक–संगठन/व्यक्ति (आर्टिस्ट) के साथ रहकर पूर्ण करता है तथा निर्धारित समयावधि में पूर्ण करने के पश्चात संस्था/फर्म/ व्यावसायिक–संगठन/व्यक्ति (आर्टिस्ट) द्वारा उसे इस आशय का प्रमाण–पत्र दिया जाता है जिसके आधार पर उसका मूल्यांकन किया जावेगा।

शिक्षुता/प्रशिक्षुता कार्यक्रम की सफलता संचालक एवं प्राध्यापकों के कुशल मार्गदर्शन पर निर्भर है। ऐसे विद्यार्थी जो शिक्षुता कार्यक्रम करना चाहते हैं वे संबंधित विषय के शिक्षक की अनुशंसा पर संचालक की अनुमति से यह पाठयक्रम पूर्ण कर पायेंगें। विद्यार्थी को शिक्षुता/प्रशिक्षुता कार्यक्रम के लिये संबंधित व्यक्ति (आर्टिस्ट)/संस्था/फर्म से सहमति पत्र प्राप्त कर संस्थान में जमा करना होगा। इसके पश्चात ही संचालक विद्यार्थी को शिक्षुता/प्रशिक्षुता पाठयक्रम के लिए अनुमति प्रदान करेंगे।

संचालक एवं शिक्षक–पर्यवेक्षकगण यह सुनिश्चित करेंगे कि विद्यार्थी शिक्षुता/प्रशिक्षुता पाठयक्रम के लिए जिस संस्था/व्यक्ति (आर्टिस्ट) के पास जा रहा है वो प्रतिष्ठित, स्तरीय व वैधानिक है तथा शिक्षुता/प्रशिुक्षता कार्यक्रम का निष्पादन करने के लिये सक्षम है। पाठयक्रम/सह–गतिविधि की गुणवत्ता के लिए संबंधित शिक्षक एवं विद्यार्थी समान रूप से जिम्मेदार होंगे। प्रत्येक शिक्षुता/प्रशिक्षुता पाठयक्रम के लिये (Learning Outcome) का स्पष्ट निर्धारण करना होगा।

(क) प्रशिक्षुता/शिक्षुता कार्य हेतु निर्देश

- प्रशिक्षुता, शिक्षुता के कार्यक्रम अंतर्गत प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को कार्यारम्भ के प्रथमिक चरण में, कार्य की प्रारंभिक रूपरेखा, कार्यक्षेत्र, संस्था की जानकारी, आदि प्रारूप – A1 में प्रस्तुत करना होगा।
- विद्यार्थी को न्यूनतम 07 पूर्ण दिवस अथवा 15 दिवस पार्ट टाइम कार्य संबंधित व्यक्ति (आर्टिस्ट)/संस्था/व्यावसायिक संगठन/फर्म के साथ करना होगा तथा इसके उपरांत शिक्षुता पाठयक्रम में संबंधित संस्था/व्यक्ति (आर्टिस्ट) द्वारा उपलब्ध कराये गए प्रतिपुष्टि प्रपत्र (Feedback Form – G4) के आधार पर ही विद्यार्थी का आंतरिक मूल्यांकन किया जायेगा जो कि कुल अंको का 50 प्रतिशत होगा।
- शिक्षुता/प्रशिक्षुता पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी संस्थान में उसके द्वारा किये गये शिक्षुता/प्रशिक्षुता कार्य की अंतिम रिपोर्ट निर्धारित प्रारूप – A2 में प्रस्तुत करेगा तथा जिसमें उसके द्वारा शिक्षुता से प्राप्त ज्ञान व कौशल वृद्धि का भी उल्लेख होगा। विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट में उद्देश्य, पूर्व निर्धारित Learning Outcomes, शिक्षुता/प्रशिक्षुता की अवधि में ज्ञान व कौशल में अभिवृद्धि तथा भविष्य की योजना आदि का उल्लेख करना होगा। यह रिपोर्ट स्वहस्तलिखित, न्यूनतम 2000 शब्दों की होनी चाहिए, आवश्यकतानुसार ग्राफ, जियोटैग फोटोग्राफ, चार्ट आदि का समावेश किया जाना चाहिए।

(ख) प्रशिक्षुता (Internship)/शिक्षुता (Apprenticeship) कार्य का मूल्यांकन

निर्धारित अवधि के पश्चात प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा प्रशिक्षण कार्य की प्रस्तुत रिपोर्ट का सत्रांत में मूल्यांकन किया जावेगा। आंतरिक मूल्यांकन के अतिरिक्त परीक्षा शाखा द्वारा नामित बाह्य परीक्षक की उपस्थिति में विद्यार्थी को प्रस्तुतिकरण तथा मौखिक परीक्षा देना होगी। मूल्यांकन, रिपोर्ट

प्रस्तुतिकरण एवं मौखिकी पर आधारित होगा जिसमें विद्वार्थी के द्वारा अर्जित ज्ञान व कोशल में प्रशिक्षुता/शिक्षुता के कारण हुई अभिवृद्धि मुख्य आधार होंगे।

- मूल्यांकनकर्ता यह सुनिश्चित करेंगे कि रिपोर्ट में निर्धारित आवश्यक चरणों का समावेश किया गया है तथा प्रशिक्षुता (Internship) / शिक्षुता (Apprenticeship) कार्य द्वारा पूर्व निर्धारित Learning Outcomes प्राप्त कर लिए गए हैं, उसी के आधार पर अंतिम मूल्यांकन तथा नियमतः ग्रेड आवंटित किया जावेगा।
- आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन में अंकों का विभाजन क्रमशः 50 एवं 50 अंकों का होगा।
- संबंधित संस्था/व्यक्ति (आर्टिस्ट) द्वारा उपलब्ध कराये गये प्रतिपुष्टि प्रपत्र (Feedback Form प्रारूप G4) के आधार पर ही विद्यार्थी का आंतरिक मूल्यांकन किया जायेगा जो कि कुल 50 अंको का होगा।
- बाह्य मूल्यांकन के 50 अंको का विभाजन निम्नानुसार होगाः
  - 30 अंक – अंतिम प्रोजेक्ट रिपोर्ट एवं प्रस्तुतिकरण
  - 20 अंक – मौखिकी

  प्रत्येक विद्यार्थी के द्वारा गुणवत्तापरक कार्य निष्पादन एवं अर्जित उपलब्धियों (Learning Outcomes) के आधार पर मूल्यांकन किया जायेगा।

5. 'ऑनर्स विथ रिसर्च' प्रोग्राम अंतर्गत अनुसंधान परियोजना (Research Project)

नवीन अकादमिक संरचना में अनुसंधान परियोजना एक महत्वपूर्ण अंग है। अनुसंधान परियोजना आधारित शैक्षणिक व्यवस्था विद्यार्थी की शोध प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के साथ–साथ उसकी बौधिक क्षमता को भी विकसित करने में सहायक होगी। अनुसंधान कार्य विद्यार्थी की व्यक्तिगत मौलिक अनुसंधानिक सोच एवं उसे मूर्तरूप प्रदान करने की क्षमता पर आधारित की गई गतिविधियों का संयोजन है। जिससे विद्यार्थी न सिर्फ अनुसंधान करना सीखता है अपितु नवीन विचारों का सृजन भी करने में सक्षम होता है। संस्थान के बाहर के फील्ड–स्टडी/केस–स्टडी के अनुभव विद्यार्थियों के लिए अमूल्य है। अनुसंधान परियोजना के माध्यम से विद्यार्थियों में मौलिक अनुसंधान कार्य के अलावा स्वप्रबंधन, लोकतांत्रिक राय का निर्माण, एवं निर्णय लेने की क्षमता में अभिवृद्धि होती है।

अनुसंधान परियोजना में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षक के द्वारा विद्यार्थियों को दिये जाने वाले मार्गदर्शन के द्वारा, शिक्षकों में भी अनुसंधान प्रवृत्ति, विषय में अंर्तदृष्टि और समस्याओं को समझने एवं उनके निराकरण का कौशल विकसित होता है। अनुसंधान परियोजना की विशेषता है कि इसमें शामिल सभी लोग एक–दूसरे से सीखते हैं। शिक्षक का दायित्व है कि वह विद्यार्थियों के साथ अकादमिक संवाद स्थापित करें, विषय से संबंधित प्रमुख मुद्दों पर सोचने एवं प्रश्न करने की प्रवृत्ति विकसित करें तथा उनके उत्तर प्राप्त करने के लिये उपयुक्त शोध–प्रविधियों को अपनाने के सुझाव दे तथा विद्यार्थियों द्वारा किये गये कार्यों की सतत् समीक्षा करेंगे।

(क) अनुसंधान परियोजना की योजना

(i) अनुसंधान परियोजना का कार्य शोध–निर्देशक के मार्गदर्शन में विद्यार्थी को सातवें एवं आठवें सेमेस्टर में करना होगा। अनुसंधान कार्य सातवें एवं आठवें सेमेस्टर में पृथक–पृथक हो सकते है, अथवा एक शीर्षक पर भी हो सकते है अर्थात सातवें सेमेस्टर में किसी शोध परियोजना पर प्रोटोटाइप/लघु–शोध कार्य करते हुए उसे आठवें सेमेस्टर में विकसित करने का कार्य किया जा सकता है। सातवें सेमेस्टर में यह कार्य छः क्रेडिट का एवं आठवें सेमेस्टर में यह कार्य दस क्रेडिट का होगा।

(ii) अनुसंधान परियोजना का कार्य विभाग के शोध–केन्द्र में ही सम्पन्न करना होगा। आवश्यकतानुसार संस्थान के बाहर स्थित किसी संस्था अथवा शोध संस्था से आवश्यक सहायता ली जा सकती हैं। इसके लिए विद्यार्थी को न्यूनतम निर्धारित अवधि के लिए संस्था में कार्य करना होगा, परन्तु समस्त कार्यवाही शोध–निर्देशक के मार्गदर्शन में ही सम्पन्न होगीं।

(iii) **शोध–निर्देशक (Research Supervisor):** बरकतउल्ला विश्वविद्यालय के शोध केन्द्र के रूप में चिन्हित विभागों में कार्यरत विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त शोध–निर्देशक संकाय सदस्य, स्नातक चतुर्थ वर्ष के विद्यार्थियों के शोध–निर्देशक के रूप में कार्य कर सकते है। अतः विभाग में पंजीकृत चतुर्थ वर्ष के विद्यार्थियों की कुल संख्या को दृष्टिगत रखते हुए शोध निर्देशक के अधीन विद्यार्थी आवंटित किए जावेंगे। विभाग के शेष नियमित एवं मानसेवी शिक्षकों को शोध–निर्देशक के साथ सह–शोध निर्देशक के रूप में कार्य करने बाबत् आसंजित किया जा सकता है।

(iv) **अनुसंधान परियोजना की अकादमिक संरचना:** सातवें एवं आठवें सेमेस्टर के लिए अकादमिक संरचना का स्वरूप एक समान रहेगा। सामान्यतः सातवें सेमेस्टर में किए गए शोध कार्य का विस्तार आठवें सेमेस्टर में किया जावेगा। उदाहरणार्थ (अ) सातवें सेमेस्टर में माइक्रो प्रोजेक्ट एवं आठवें सेमेस्टर में मेजर प्रोजेक्ट (ब) सातवें सेमेस्टर में प्रोटोटाइप मॉडल का विकास एवं आठवें सेमेस्टर मे पूर्ण मॉडल विकसित करना। शोध–निर्देशक एवं सह–शोध निर्देशक की सहमति से सातवें सेमेस्टर में किए गए अनुसंधान परियोजना कार्य के स्वरूप को आठवें सेमेस्टर में परिवर्तित किया जा सकता है। अनुसंधान परियोजना की अकादमिक संरचना का विस्तृत स्वरूप निम्नानुसार प्रस्तावित है। विषय की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए संरचना में आवश्यक बदलाव किए जा सकते है। इसके लिए विभागाध्यक्ष स्वयं निर्णय लेगें।

(ख) <u>अनुसंधान परियोजना हेतु विषय का चयन</u>

अनुसंधान परियोजना में विषय का चयन अत्यधिक महत्वपूर्ण है। विषय/शीर्षक चयन में, विद्यार्थियों की विषय विशेष में रूचि, मौलिक शोध कार्य, वैज्ञानिक अविष्कारों के अनुप्रयोगों, वर्तमान समय की आवश्यकता, वर्तमान सामाजिक परिदृश्य, इत्यादि को आधार मानकर, अनुसंधान परियोजना की उपादेयता को ध्यान में रखते हुए विषय आवंटन करना चाहिए। एक ही विषय कई विद्यार्थियों को दिया जा सकता है, परन्तु प्रत्येक विद्यार्थी उपरोक्त विषय पर स्वतंत्र रूप से कार्य करेगा एवं अंतिम प्रतिवेदन भी पृथक ही जमा करेगा। परियोजना कार्य न ही बहुत व्यापक हो, न ही बहुत सीमित हो, अर्थात नियत समयावधि में शोधार्थी इसे पूर्ण कर सकें।

अनुसंधान परियोजना के विषय शोधपरक एवं सामाजिक महत्व के होना चाहिए, तथा यह एक शोध विषय के रूप में अनुसंधान को प्रेरित करने वाले हो। शिक्षक यह सुनिश्चित करें कि शोध के विषय के चयन हेतु Learing Outcomes इस प्रकार निर्धारित किये जाए जो प्राप्ति योग्य हों तथा जिनके आधार पर प्राप्त ज्ञान एवं कौशल का मापन व अवलोकन (Measurable & Observable) स्पष्टता के साथ किया जा सके।

अनुसंधान परियोजना को विभागीय शोध–केन्द्र में उपलब्ध संसाधनों यथा उपकरण, Measuring Devices, लाईब्रेरी, इंटरनेट, ऑडियो विजुअल सामग्री तथा संस्थान के बाहर फील्ड–वर्क/केस–स्टडी अथवा अन्य संस्थान के साथ किए गए MOU आदि के आधार पर पूर्ण किया जाना चाहिए।

(ग) <u>अनुसंधान परियोजना हेतु निर्देश</u>

- अनुसंधान परियोजना सामान्य रूप से एक क्षेत्र/विषय से संबंधित विद्यार्थियों के समूह बनाकर उन्हें आवंटित किये जायें। समूह में विद्यार्थियों की संख्या अनुसंधान परियोजना की प्रकृति एवं आवश्यकता के अनुरूप रखी जा सकती हैं परन्तु प्रत्येक शोधार्थी को अपना शोध कार्य स्वतंत्र रूप से ही सम्पन्न करना होगा।

- विद्यार्थी को फील्ड–वर्क आधारित अनुसंधान परियोजना में न्यूनतम 07 पूर्ण दिवस अथवा 15 दिवस अंशकालीन (पार्ट टाइम) फील्ड वर्क करना अनिवार्य है। यदि वह मान्यता प्राप्त संस्था से यह कार्य कर रहा है तो उस संस्था का प्रमाण–पत्र अथवा फील्ड–वर्क के साक्ष्य जियोटैग फोटो के रूप में रिपोर्ट में प्रस्तुत करना होगा।

- अनुसंधान प्रतिवेदन (Dissertation) न्यूनतम 5000 शब्दों में प्रस्तुत करना होगा। प्रतिवेदन में आवश्यकतानुसार, चार्ट, ग्राफ, जियोटैग फोटोग्राफ आदि का प्रयोग करना आवश्यक है, तथा यथा स्थान आवश्यक References को भी शामिल करना अनिवार्य होगा।

- शोध निर्देशक सुनिश्चित करेंगे कि प्रत्येक 15 दिवस पर, शोधार्थियों की बैठक आयोजित कर निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिये, शोधार्थी द्वारा किये गये प्रयासों की समीक्षा करें एवं उन्हें समय–समय पर उचित मार्गदर्शन प्रदान करें।

- अनुसंधान परियोजना का कार्य किसी भी रूप में नकल पर आधारित नहीं होगा। शोधार्थी को शोध–केन्द्र में उपलब्ध संसाधनों के आधार पर अनुसंधान परियोजना को पूर्ण करना होगा। विद्यार्थी को यह प्रमाण–पत्र भी रिपोर्ट के साथ देना होगा कि प्रस्तुत परियोजना रिपोर्ट उसका मौलिक कार्य है। अनुसंधान परियोजना एक सेमेस्टर की अवधि में पूर्ण किया जाना है, परंतु किसी भी स्थिति में विद्यार्थी को संस्था के अकादमिक कैलेण्डर में परीक्षा परिणाम घोषणा की पूर्व निर्धारित तिथि से 15 दिवस पूर्व इसे पूर्ण करना अनिवार्य होगा, ऐसा न करने की स्थिति में विद्यार्थी को अनुपस्थित श्रेणी में रखते हुए एटीकेटी माना जाएगा।

- मूल्यांकनकर्ता ये सुनिश्चित करेंगे कि अनुसंधान परियोजना में निर्धारित आवश्यक चरणों का समावेश किया गया है तथा अनुसंधान परियोजना द्वारा पूर्व निर्धारित (Learning Outcome) प्राप्त कर लिए गए हैं।

- शोधार्थी द्वारा रिपोर्ट का प्रस्तुतिकरण भी किया जायेगा, जिसमें शोधार्थी द्वारा किए गए कार्य निष्पादन का मूल्यांकन किया जायेगा।

- शोधार्थी को आगे वर्णित मूल्यांकन तालिका अनुसार Synopsis (प्रारूप–Q1) समय–सीमा में जमा करनी होगी एवं प्रगति–प्रतिवेदन निर्धारित प्रारूप–Q2 एवं Q3 में देना होगा जिसके आधार पर संबंधित शिक्षक आंतरिक मूल्यांकन का कार्य करेंगे। आंतरिक मूल्यांकन हेतु तीनों प्रतिवेदनों में प्राप्त अंकों की गणना की जायेगी।

- आंतरिक मूल्यांकन के अतिरिक्त अनुसंधान परियोजना की अंतिम रिपोर्ट प्रारूप–Q4 में जमा करने के पश्चात अनुसंधान परियोजना प्रतिवेदन (Research Project Report) पर परीक्षा शाखा द्वारा नामित बाह्य परीक्षक, विभागीय सदस्यों एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति में प्रस्तुतिकरण एवं मौखिकी परीक्षा होगी।

(घ) <u>शोध कार्य का मूल्यांकन</u>

- अनुसंधान परियोजना का उद्देश्य शोधार्थियों में विषय से संबंधित शोध के लिए नवीन क्षेत्रों में अन्वेषण कार्य करना है। ताकि मौलिक शोध विचारों को विकसित किया जा सकें। प्रत्येक विद्यार्थी परियोजना की निर्धारित अवधि के अंत में अनुसंधान परियोजना का प्रतिवेदन (Research Project Report) प्रस्तुत करेंगे, जिसका मूल्यांकन निम्नानुसार किया जायेगाः

<u>Semester-VII: Research Project (06 Credit)</u>

a) A synopsis (at least 500 words) of the proposed Research Project along with the title must be submitted by the student to the head of the department duly forwarded by the supervisor. The following points must be included in the synopsis:

- Title of the Research Project
- Purpose of research
- A brief review of the work already done in the field
- Noteworthy contribution in the field of proposed work
- Proposed methodology during the tenure of research work
- Expected outcome of the proposed work
- Bibliography

b) The student should prepare the research project in typed form with at least 5000 words.

c) The following points must be included in the Research Project:

I

- Declaration by the Student
- Certificate from supervisor
- Forwarding letter of the Head of Department
- Acknowledgement

II

- Abstract
- List of tables
- List of figures
- List of abbreviations
- Table of contents

III

- Introduction
- Literature Review
- Problem Identify/Proposed work & Methodology
- Data analysis/Algorithms (if required)
- Result and discussion
- Conclusion and Future work
- Bibliography

Semester-VIII: Research Project (10 Credit)

a) **Synopsis**: A synopsis (at least 500 words) of the proposed Research Project along with the title must be submitted by the student to the head of the department duly forwarded by the supervisor. The following points are must be included in the synopsis:

- Title of the Research Project
- Purpose of research
- A brief review of the work already done in the field
- Noteworthy contribution in the field of proposed work
- Proposed methodology during the tenure of research work
- Expected outcome of the proposed work
- Bibliography

b) Research Project should be prepared by the student in typed form having at least 5000 words. At least 01 Research Paper must be prepared by the student and submission of the manuscript along with the research project. The following points must be included in the Research Project:

I

- Declaration by the Student
- Certificate from the Supervisor
- Forwarding letter of Head of the Department
- Acknowledgement

II

- Abstract
- List of tables
- List of figures
- List of abbreviations
- Table of contents

III: Chapters of the Research Project

- Introduction
- Literature Review
- Problem Identify/Proposed work & Methodology
- Methodology
- Data analysis/Algorithms (if required)
- Result and discussion
- Conclusion and Future work
- Bibliography
- Appendices

Marks Distribution/Evaluation:

Semester-VII

I: Internal Evaluation - 50 Marks		
SN	**Description**	**Allotted Marks**
(i)	Synopsis (Q-1)	10 Marks
(ii)	Progress Report:	
	(a) Title/Area and Purpose of Research Project - End of July (Q-2)	03 Marks
	(b) Literature review and objective/hypothesis - End of August (Q-3)	03 Marks
(iii)	Attendance	04 Marks
(iv)	Submission of Final Project - Before Conduction of the Exam (Q-4)	30 Marks
II: External Evaluation - 50 Marks		
(i)	Presentation of the project	30 Marks
(ii)	Viva-Voce	20 Marks

Semester-VIII

SN	Description	Allotted Marks
I: Internal Evaluation - 50 Marks		
(i)	Synopsis	10 Marks
(ii)	Progress Report:	
	(a) Title/Area and Purpose of Research Project - End of January (Q-1)	03 Marks
	(b) Literature review and objective/hypothesis - End of February (Q-2)	03 Marks
(iii)	Attendance	04 Marks
(iv)	Submission of Final Project - Before Conduction of the External Examination (Q-3)	30 Marks
II: External Evaluation - 50 Marks		
(i)	Presentation of the project	30 Marks
(ii)	Viva-Voce	20 Marks

उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल
Institute for Excellence in Higher Education, Bhopal

IEHE Bhopal

Office – Kaliasot Dam, Kolar Road, Bhopal - 462016 Tele: (0755) 2492433, 2492460
E-mail: ***iehebhopal@mp.gov.in, iehe.iqac2020@gmail.com****, Website:* ***https://www.iehe.ac.in***

क्रमांक: ..../अका./............../20....   भोपाल, दिनांक: ....

प्रति,

....

....

....

विषय: आपके संस्थान/मार्गदर्शन में **परियोजना–कार्य/प्रशिक्षण** एवं जानकारी संबंधित।

महोदय/महोदया,

मध्यप्रदेश शासन, उच्च शिक्षा विभाग, भोपाल द्वारा महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के लिये विषयांतर्गत शोध/प्रशिक्षण/मार्गदर्शन कार्य करवाने के निर्देश प्रदान किये गये हैं।

तत्संबंध में आपका संस्थान/मार्गदर्शन महत्वपूर्ण जिसमें हमारे विद्यार्थी प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते हैं। कृपया संलग्न प्रपत्र पर संस्था/प्रशिक्षक/व्यवसाय के संबंध में जानकारी उपलब्ध कराने एवं प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु सहमति देने का सादर अनुरोध है।

धन्यवाद।

संलग्नक: प्रारूप–G2

संचालक के हस्ताक्षर ....

सील:

परियोजना–कार्य / प्रशिक्षुता / शिक्षुता के प्रशिक्षण हेतु संस्था की जानकारी एवं सहमति–पत्र

1. संस्थान / प्रशिक्षक / व्यवसाय का नाम एवं पंजीकरण ....
2. संस्था का स्वरूप (निजी / शासकीय / अर्द्धशासकीय / अन्य) ....
3. संस्थान के मार्गदर्शन क्षेत्र का नाम (जिसमें कार्य किया जाता है) ....
4. संस्थान के अंतर्गत विभिन्न पदों पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की संख्या ....
5. अपेक्षित अधिकतम विद्यार्थी संख्या जिनको संस्थान प्रशिक्षण दे सकता है ....
6. संस्थान से प्रशिक्षण उपरांत संगठित / असंगठित क्षेत्र में रोज़गार की संभावना ....
7. अन्य विशेष जानकारी ....

संस्था / व्यक्तिगत मार्गदर्शन द्वारा, **उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल** के विद्यार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान करने की सहमति प्रदान की जाती है।

हस्ताक्षर एवं दिनांकः

संस्था प्रमुख / अधिकृत व्यक्ति का नाम एवं सीलः

उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल
Institute for Excellence in Higher Education, Bhopal

IEHE Bhopal

Office – Kaliasot Dam, Kolar Road, Bhopal - 462016 Tele: (0755) 2492433, 2492460
*a-mail: **iehebhopal@mp.gov.in, iehe.iqac2020@gmail.com**, Website: **https://www.iehe.ac.in***

क्रमांक: ..../अका./............../20....   भोपाल, दिनांक: ....

प्रति,

....

....

....

विषयः आपके संस्थान/मार्गदर्शन में **परियोजना–कार्य/प्रशिक्षण** संबंधित।

महोदय/महोदया,

मध्यप्रदेश शासन, उच्च शिक्षा विभाग, भोपाल द्वारा महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के लिये विषयांतर्गत प्रशिक्षण/मार्गदर्शन कार्य करवाने के निर्देश प्रदान किये गये हैं।

तत्संबंध में आपका संस्थान/मार्गदर्शन महत्वपूर्ण हैं जिसमें हमारे विद्यार्थी प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते हैं। अतः इन्हें प्रशिक्षण देने का एवं प्रशिक्षण उपरांत विद्यार्थी से प्रशिक्षण संबंधी ज्ञान एवं कौशल की जानकारी, संलग्न प्रतिपुष्टि (फीड बैक) प्रपत्र में उपलब्ध कराने का अनुरोध है, जिसके आधार पर विद्यार्थी का प्रशिक्षण उपरांत मूल्यांकन किया जा सके।

धन्यवाद।

संलग्नकः

1. प्रतिपुष्टि प्रपत्र (प्रारूप–G4)
2. प्रशिक्षण हेतु विद्यार्थियों की सूची

संचालक के हस्ताक्षर ....

सीलः

प्रतिपुष्टि–प्रपत्र (Feedback-Form)

परियोजना–कार्य / प्रशिक्षुता / शिक्षुता

टीपः संबंधित बाह्य संस्था (यदि कोई हो) के संस्था प्रमुख / अधिकृत अधिकारी / मार्गदर्शक द्वारा भरा जाए।

प्रशिक्षु विद्यार्थी का नाम : ....

संस्था का नाम : **उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल**

कक्षा : ....

अनुक्रमांक : ....

स.क्र.	मूल्यांकन का आधार	प्रदत्त मूल्यांकन की श्रेणी (A/B/C)#	टिप्पणी
1	विद्यार्थी की नियमित उपस्थिति		
2	विद्यार्थी द्वारा प्राप्त सैद्धांतिक ज्ञान		
3	कार्यावधि में विद्यार्थी द्वारा अर्जित कौशल, व्यवहारिक ज्ञान		
4	कार्य के प्रति विद्यार्थी की रूचि एवं गंभीरता		
5	कार्यावधि में विद्यार्थी का सीखने के प्रति रवैया (Attitude) एवं व्यवहार		
6	सहकर्मियों, अन्य सदस्यों से सामंजस्य, समूह में कार्य करने की क्षमता		
7	विद्यार्थी की समग्र (Overall) श्रेणी		

श्रेणी : **A**– उत्कृष्ट (Excellent), **B** – अच्छा (Good), **C** – सामान्य (Average)

दिनांक: ....

स्थान: ....

अधिकृत व्यक्ति के हस्ताक्षर: ....

नाम: ....

पदमुद्रा (सील):

परियोजना–कार्य का प्रथम प्रगति प्रतिवेदन

(स्व–हस्तलिखित, 500 शब्दों में)

1. **परियोजना–कार्य का परिचय एवं क्षेत्र**

इस बिंदु के अंतर्गत विद्यार्थी अपनी परियोजना का प्रारंभिक परिचय प्रस्तुत करेंगे जिसमें कार्य का वृहत क्षेत्र, आवश्यकता एवं विषय वस्तु की परिकल्पना का विवरण दिया जावेगा।

2. **परियोजना–कार्य की योजना**

प्रस्तावित कार्य की रूपरेखा तथा किस प्रकार उसे संपन्न किया जाना है, इसकी जानकारी प्रस्तुत करें।

3. **विद्यार्थियों में कार्य विभाजन** *(समूह में किए गए अनुसंधान परियोजना–कार्य हेतु)*

समूह में कार्य करने वाले विद्यार्थियों के मध्य परियोजना से संबंधित कार्यों का समान तथा स्पष्ट विभाजन होना अनिवार्य है। कार्ययोजना के साथ–साथ इस कार्य विभाजन का उल्लेख भी प्रारंभ में ही किया जावेगा जिससे विद्यार्थियों के द्वारा संपन्न कार्य की पृथक–पृथक मूल्यांकन के समय स्पष्टता हो सके।

4. **संबंधित कार्यस्थल/संस्थान का विवरण** *(जहाँ कार्य किया जाना है)*

परियोजना–कार्य/फील्ड–सर्वे इत्यादि का कार्यस्थल, जहाँ इसे पूर्ण किया जाना है, अथवा जिस संस्था या स्थल का प्रारूप समक्ष रखकर योजना बनाई गई है, उसका पूर्ण विवरण दें। विषय की आवश्यकता के अनुरूप संस्थान के अंतर्गत कार्यों का विवरण एवं अनुसंधान परियोजना से संबंधित कार्यप्रणाली का विवरण देना उचित होगा।

5. **उद्देश्य तथा प्रासंगिकता**

प्रस्तावित परियोजना–कार्य के लक्ष्य संक्षिप्त और SMART* होना चाहिए।

* **S**-Specific (विशिष्ट/स्पष्ट), **M**-Measurable (मापन योग्य), **A**-Achieable (प्राप्त/पूर्ण करने योग्य), **R**-Realistic/Relatable (वास्तविक/प्रासंगिक), **T**-Time Bound (समयबद्ध)

यहाँ **विशिष्ट** होने से अभिप्राय है कि परियोजना–कार्य के पीछे स्पष्ट निश्चित उद्देश्य और लक्ष्य निर्धारित हों। **मापन योग्य** का अर्थ है कि उद्देश्य को इस प्रकार से परिभाषित किया जाए कि यह सुनिश्चित किया जा सकें की प्रस्तावित उद्देश्य की पूर्ण/आंशिक पूर्ति हो सकी है अथवा नहीं। साथ ही उद्देश्यों की वास्तविक प्राप्ति की सुनिश्चितता संभावना भी अवलोकनीय हो। परियोजना–कार्य के उद्देश्य को कितने समय में, किस प्रकार से पूर्ण किया जा सकेगा इसका भी कथन कार्ययोजना में होना चाहिए।

परियोजना–कार्य की उपयोगिता, वास्तविक जीवन में प्रासंगिकता और इसके अनुप्रयोग के बारे में इस रिपोर्ट में लेखन किया जाना चाहिए।

परियोजना–कार्य का द्वितीय प्रगति प्रतिवेदन

(स्व–हस्तलिखित, 500 शब्दों में)

1. **परियोजना–कार्य प्रणाली (वर्क फ्लो)**

   परियोजना–कार्य में की जाने वाली कार्यवाही, चरण और उनके क्रम के बारे में इस रिपोर्ट में लेखन किया जाए।

2. **जानकारी संग्रह/फील्ड सर्वे का विवरण**

   परियोजना–कार्य संबंधित सर्वे, आवश्यक जानकारी संग्रह, प्रक्रिया की जानकारी आदि।

3. **साहित्य समीक्षा**

   इस परियोजना से संबंधित पूर्व कार्य, तकनीकी पक्ष, साहित्य, आदि का प्रमाणिक लेखा जोखा प्रस्तुत करें।

4. **कार्य विभाजन के अनुरूप कार्य की प्रगति** (पृथक–पृथक)

   समूह में कार्य करने वाले विद्यार्थियों के मध्य परियोजना–कार्य के विभिन्न कार्यों का विभाजन किया गया है, अतएवः इस द्वितीय रिपोर्ट में प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा अब तक किये गये कार्यों का स्पष्ट ब्यौरा यहाँ अपेक्षित है।

परियोजना–कार्य का तृतीय प्रगति प्रतिवेदन

(स्व–हस्तलिखित, 500 शब्दों में)

1. **विद्यार्थी द्वारा सम्पादित कार्य का विवरण** (प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा पृथक–पृथक)

   परियोजना–कार्य में कार्य करने वाले प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा परियोजना–कार्य के अंतर्गत आवंटित कार्य में से अब तक किये गये कार्यों का विवरण विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत किया जाये।

2. **जानकारी/आंकड़ों का विश्लेषण**

   एकत्रित जानकारी, संख्यात्मक आंकड़ों का सांख्यिकीय एवं तकनीकी विश्लेषण। विश्लेषण का आधार।

3. **विश्लेषण की प्रविधि/अनुप्रयुक्त तकनीक**

   जानकारी एवं परिणामों को विश्लेषण करने की प्रविधि, प्रविधि का चुनाव, प्रक्रिया का पूर्ण विवरण, औचित्य, त्रुटि एवं परिणामों का विश्लेषण। अपेक्षित परिणामों के संदर्भ में तुलना।

4. **परियोजना–कार्य में आने वाली चुनौतियां**

   परियोजना–कार्य के दौरान बाधाओं, चुनौतियों एवं अन–अपेक्षित परिणाम देने वाली प्रक्रियाओं की जानकारी एवं उनसे उत्पन्न परिस्थितियां, उनके समाधान आदि का ब्यौरा।

परियोजना–कार्य की अंतिम रिपोर्ट

(स्व–हस्तलिखित, न्यूनतम 5000 शब्दों में)

1. परियोजना–कार्य का विषय / शीर्षक
2. विद्यार्थी का मौलिकता घोषणा–पत्र
3. शिक्षक–पर्यवेक्षक / निर्देशक का अनुमोदन पत्र
4. संस्था / व्यक्ति / मार्गदर्शक द्वारा कार्य पूर्णता प्रमाण–पत्र
5. आभार–पत्र
6. अनुक्रमणिका
7. **अध्याय प्रथम**
    - परियोजना–कार्य का परिचय एवं क्षेत्र
    - पृष्ठभूमि, साहित्य समीक्षा
    - परियोजना–कार्य की योजना, प्रासंगिकता एवं लक्षित प्रतिफल
    - संबंधित कार्यस्थल / संस्थान का विवरण (जहाँ कार्य किया गया है)
8. **अध्याय द्वितीय**
    - परियोजना–कार्य प्रणाली (वर्क फ्लो)
    - जानकारी संग्रह / फील्ड सर्वे का विवरण
    - विश्लेषण की प्रविधि / अनुप्रयुक्त तकनीक, जानकारी / आंकड़ों का विश्लेषण
9. **अध्याय तृतीय**
    - निष्कर्ष, प्राप्त प्रतिफल एवं विश्लेषण
    - परियोजना–कार्य में चुनौतियां
    - निष्कर्ष के आधार पर अनुशंसाएं
10. संदर्भ सूची

अध्याय–प्रथम

➢ **परियोजना–कार्य का परिचय एवं क्षेत्र**

इस बिंदु के अंतर्गत विद्यार्थी अपनी प्रस्तावित परियोजना–कार्य का प्रारंभिक परिचय प्रस्तुत करेंगे जिसमें कार्य का वृहत क्षेत्र, आवश्यकता, विषय वस्तु की परिकल्पना का विवरण, आदि दिया जायेगा।

➢ **पृष्ठभूमि, साहित्य समीक्षा**

इस परियोजना–कार्य से संबंधित पूर्व कार्य, तकनीकी पक्ष, साहित्य, आदि का प्रमाणिक लेखा जोखा प्रस्तुत करें।

➢ **परियोजना–कार्य की योजना, प्रसांगिकता एवं लक्षित प्रतिफल**

प्रस्तावित कार्य की रूपरेखा तथा किस प्रकार उसे संपन्न किया जाना है, इसकी जानकारी प्रस्तुत करें।

प्रस्तावित परियोजना–कार्य के लक्ष्य संक्षिप्त और **SMART**, **S**-Specific (विशिष्ट/स्पष्ट), **M**-Measurable (मापन योग्य), **A**-Achieable (प्राप्त/पूर्ण करने योग्य), **R**-Realistic/Relatable (वास्तविक/प्रासंगिक), **T**-Time Bound (समयबद्ध) होना चाहिए।

परियोजना–कार्य की उपयोगिता, वास्तविक जीवन में प्रासंगिकता, यह कार्य किस प्रकार से प्रभावी होगा और इसके अनुप्रयोग के बारे में इस रिपोर्ट में लेखन किया जाना चाहिए।

➢ **संबंधित कार्यस्थल/संस्था का विवरण** (जहाँ कार्य किया गया है)

परियोजना–कार्य/फील्ड–सर्वे इत्यादि का कार्यस्थल, जहाँ इसे पूर्ण किया जाना है, अथवा जिस संस्थान या स्थल का प्रारूप समक्ष रखकर योजना बनाई गई है, उसका पूर्ण विवरण दें। विषय की आवश्यकता के अनुरूप संस्थान के अंतर्गत कार्यों का विवरण एवं परियोजना–कार्य से संबंधित कार्यप्रणाली का विवरण देना उचित होगा।

अध्याय – द्वितीय

- **परियोजना–कार्य कार्यप्रणाली (वर्क फ्लो)**

  परियोजना–कार्य में की जाने वाली कार्यवाही, चरण और उनके क्रम के बारे में इस रिपोर्ट में लेखन किया जाए।

- **जानकारी संग्रह/फील्ड सर्वे का विवरण**

  परियोजना–कार्य संबंधित सर्वे, आवश्यक जानकारी संग्रह, आंकड़ों के एकीकरण, सामान्यीकरण तथा सारणीयन प्रक्रिया की जानकारी आदि।

- **विश्लेषण की प्रविधि/अनुप्रयुक्त तकनीक, जानकारी/आंकड़ों का विश्लेषण**

  एकत्रित जानकारी, संख्यात्मक आंकड़ों का सांख्यिकीय एवं तकनीकी विश्लेषण। विश्लेषण का आधार। जानकारी एवं परिणामों को विश्लेषण करने की प्रविधि, प्रविधि का चुनाव, प्रक्रिया का पूर्ण विवरण।

अध्याय – तृतीय

- **निष्कर्ष, प्राप्त प्रतिफल एवं विश्लेषण**

  प्राप्त परिणामों औचित्य, उद्देश्य पूर्ति, संभावित त्रुटि एवं परिणामों का विश्लेषण। अपेक्षित परिणामों (लक्षित प्रतिफल) के संदर्भ में तुलना।

- **परियोजना–कार्य में चुनौतियाँ**

  परियोजना–कार्य के दौरान बाधाओं, चुनौतियों एवं अन–अपेक्षित परिणाम देने वाली प्रक्रियाओं की जानकारी एवं उनसे उत्पन्न परिस्थितियां, उनके समाधान आदि का ब्यौरा।

- **निष्कर्ष के आधार पर अनुशंसाएं**

  कार्य के परिणामों और विश्लेषण के आधार पर अनुशंसाएं, अर्थात इस क्षेत्र में कैसे और भी उन्नत प्रक्रम लागू किया जा सकता है, भविष्य में क्या परिवर्तन संभावित हैं जिसके लिए कार्यविधि में परिवर्तन/परिवर्धन होना चाहिए।

<u>संदर्भ सूची</u>

कार्य की साहित्य समीक्षा, प्रविधि, तकनीक आदि के संदर्भ में जिन पुस्तकों, लेखों, ऑनलाइन संसाधनों आदि का उपयोग किया है उनके पूर्ण विवरण यहाँ सूची के रूप में दिए जाए।

प्रशिक्षुता (Internship)/शिक्षुता (Apperentiship) का प्राथमिक प्रतिवेदन

(स्व–हस्तलिखित, 500 शब्दों में)

1. **प्रशिक्षुता (Internship)/शिक्षुता (Apperentiship) का कार्य क्षेत्र**

इस बिंदु के अंतर्गत विद्यार्थी अपने प्रस्तावित प्रशिक्षण का सार प्रस्तुत करेंगे जिसमें प्रशिक्षण का वृहत क्षेत्र, आवश्यकता एवं अनुप्रयोग की परिकल्पना का विवरण दिया जायेगा।

2. **कार्य का विवरण**

प्रशिक्षण कार्य के अंतर्गत सीखने वाले कार्य की विषय–वस्तु, कौशल, प्रायोगिक कार्य का विवरण।

3. **संबंधित कार्यस्थल/संस्था का विवरण** (जहाँ कार्य किया जाना है)

प्रशिक्षण देने वाली संस्था, कार्यस्थल, स्वरूप, इत्यादि का वर्णन दें। संस्था के अंतर्गत किये जाने वाले कार्यों का विवरण एवं कार्य से संबंधित कार्यप्रणाली क विवरण दें।

4. **उद्देश्य तथा प्रासंगिकता**

प्रस्तावित प्रशिक्षण के लक्ष्य संक्षिप्त और **SMART**, **S**-Specific (विशिष्ट/स्पष्ट), **M**-Measurable (मापन योग्य), **A**-Achieable (प्राप्त/पूर्ण करने योग्य), **R**-Realistic/Relatable (वास्तविक/प्रासंगिक), **T**-Time Bound (समयबद्ध) होना चाहिए।

यहाँ **विशिष्ट** होने से अभिप्राय है कि प्रशिक्षण कार्य के पीछे स्पष्ट निश्चित उद्देश्य और लक्ष्य निर्धारित हों। **मापन योग्य** का अर्थ है कि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रस्तावित प्रशिक्षण के उद्देश्य की पूर्ण/आंशिक पूर्ति हो सकी है अथवा नहीं। वास्तविक प्रशिक्षण के ध्येय प्राप्ति की संभावना सुनिश्चित हो। साथ ही प्रशिक्षण के कौशल को कितने समय में, किस प्रकार से प्राप्त किया जा सकेगा इसका भी कथन कार्ययोजना में होना चाहिए।

प्रस्तावित कौशल अर्जन की वास्तविक जीवन में उपयोगिता, प्रासंगिकता और इसके अनुप्रयोग के बारे में इस रिपोर्ट में दर्ज करें।

प्रशिक्षुता (Internship)/शिक्षुता (Apperentiship) की रिपोर्ट

(स्व–हस्तलिखित, न्यूनतम 2000 शब्दों में)

1. प्रशिक्षुता (Internship)/शिक्षुता (Apperentiship) का कार्य का शीर्षक
2. विद्यार्थी की मौलिकता घोषणा–पत्र
3. शिक्षक–पर्यवेक्षक/निर्देशक का अनुमोदन–पत्र
4. संस्था/व्यक्ति (आर्टिस्ट)/मार्गदर्शक द्वारा कार्यपूर्णता प्रमाण–पत्र
5. आभार–पत्र
6. वचन–पत्र/ऑफर (प्रस्ताव) लेटर
7. अनुक्रमणिका
8. प्रशिक्षुता (Internship)/शिक्षुता (Apperentiship) कार्य का क्षेत्र
9. संस्था/व्यक्ति (आर्टिस्ट) का विवरण
10. किये गए कार्य का विवरण तथा उपयोगिता
11. उद्देश्य, प्रविधि, तकनीकी विवरण, कार्य प्रणाली
12. लक्षित प्रतिफल (Intended Outcomes)
13. प्राप्त प्रतिफल (Acheived Outcomes), दक्षतायें
14. ज्ञान एवं कौशल में अभिवृद्धि
15. अनुप्रयोग (Application)
16. निष्कर्ष एवं भविष्य की योजना

सैंपल रिपोर्ट

परियोजना–कार्य / शिक्षुता / प्रशिक्षुता

(कार्य का शीर्षक)

स्नातक विज्ञान / कला / वाणिज्य / गृहविज्ञान की डिग्री के लिये आंशिक प्रतिपूर्ति

सत्र : ....

	विद्यार्थी / विद्यार्थियों के नाम	कक्षा	अनुक्रमांक
1.	....	....	....
2.	....	....	....
3.	....	....	....

संस्था का नाम

(जहाँ कार्य पूर्ण किया गया)

....

....

शिक्षक–पर्यवेक्षक का नाम

....

....

उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) से संबद्ध

(विद्यार्थी/समूह का मौलिकता प्रमाण–पत्र)

घोषणा–पत्र

मैं/हम एतद् द्वारा घोषणा करता/करती/करते हैं/हूँ कि यह परियोजना–कार्य/शिक्षुता/प्रशिक्षुता की रिपोर्ट मेरे/हमारे द्वारा किये गये मूल (Original) कार्य पर आधारित है, जिसमें प्रकाशित एवं अप्रकाशित सामग्री का प्रयोग विधिवत स्वीकृति (Duty acknowledged) उपरांत किया गया है। मैं/हम यह भी घोषणा करते हैं कि प्रस्तुत रिपोर्ट किसी अन्य डिग्री/पाठयक्रम हेतु पूर्व/वर्तमान में प्रस्तुत नहीं की गयी है।

विद्यार्थी/विद्यार्थियों के नाम	कक्षा	अनुक्रमांक	हस्ताक्षर (दिनांक सहित)

(पर्यवेक्षक/निर्देशक का अनुमोदन–पत्र)

पर्यवेक्षक/निर्देशक

मैं .... अधोहस्ताक्षरकर्ता एतद् द्वारा प्रमाणित करता/करती हूँ कि उपरोक्त वर्णित रिपोर्ट विद्यार्थी/विद्यार्थियों द्वारा मेरे निर्देशन में, किये गये परियोजना–कार्य/शिक्षुता/प्रशिक्षुता कार्य की वास्तविक प्रतिवेदन है। यह **उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल** में मेरे अनुमोदन के पश्चात प्रस्तुत की गई है।

स्थान : ....

दिनांक : ....

हस्ताक्षर : ....

पर्यवेक्षक/निर्देशक का नाम एवं सील:

संस्था/व्यक्ति (आर्टिस्ट) द्वारा कार्य पूर्णता प्रमाण–पत्र

(कार्य समाप्ति उपरांत बाह्य संस्था द्वारा संस्था के लेटर हैड पर प्रदत्त प्रमाण–पत्र यहाँ संलग्न करें)

संस्था का नाम एवं लोगो

कार्य पूर्णता प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि (नाम) .... कक्षा .... (संस्थान का नाम) .... द्वारा परियोजना–कार्य/प्रशिक्षुता/शिक्षुता कार्ययोजना अन्तर्गत दिनांक .... से दिनांक .... तक इस संस्था से सम्बद्ध/में उपस्थित रहकर .... के क्षेत्र में कार्य किया/प्रशिक्षण प्राप्त किया।

(नाम) .... अति परिश्रमी, समर्पित और परिणामोन्मुखी है, इन्होंने संस्था में अपने कार्यकाल के दौरान **अच्छा/उत्कृष्ट** कार्य किया। हम इनके स्वर्णिम भविष्य की कामना करते हैं।

शुभकामनाओं सहित,

स्थान : .... हस्ताक्षर : ....

दिनांक : .... संस्था की सील :

आभार (Acknowledgment)

नोट : यथासंभव निम्न बिन्दुओं का समावेश करते हुए :

1. संस्थान के संचालक
2. शिक्षक–पर्यवेक्षक / निर्देशक
3. संबंधित विषय के अन्य प्राध्यापकगण एवं अन्य सहयोगी
4. बाह्य संस्था के प्रमुख एवं अन्य सहयोगी
5. सहपाठी, परिजन एवं अन्य जिनसे सहयोग प्राप्त किया गया

विद्यार्थी / विद्यार्थियों के नाम	कक्षा	अनुक्रमांक	हस्ताक्षर (दिनांक सहित)

अनुक्रमणिका		
स.क्र.	विवरण	पृष्ठ क्र.
I.		i.
II.		ii.
III.		iii.
IV.		iv.
अध्याय–प्रथम		
1.0		....
1.1		....
1.2		....
1.3		....
1.4		....
1.5		....
......		....
अध्याय–द्वितीय		
2.0		....
2.1		....
....		....
....		....
....		....
अध्याय–द्वितीय		
3.0		....
....		....
....		....
....		....
....		....
....		....
....		....
सन्दर्भ सूची		
1		
2		
3		

Format of the Synopsis (विषय–संक्षेपिका का प्रारूप)

Minimum 2000 words (न्यूनतम 2000 शब्दों में)

(CCE Marks:10)

1. **Title:** Title of the proposed research project.
2. **Purpose of Research:**
   - *(i) Background and Rationale*: Context, significance, and justification for the research.
   - *(ii) Research Problem and Questions:* Clear statement of the research problem and questions.
   - *(iii) Objectives:* Specific, measurable, achievable, relevant, and time-bound (SMART*) objectives.
3. **A Brief Review of the work already done in the field**: Overview of relevant studies, theories, and frameworks.
4. **Noteworthy contributions in the field of proposed work**
5. **Porposed methodology during the tenure of research work**:
   - o Research design and approach
   - o Participants and sampling strategy
   - o Data collection and analysis methods
   - o Instruments and materials
6. **Expected Outcome of the proposed work:**
   - *(i)* Anticipated results and contributions to the field.
   - *(ii) Significance and Impact:* Potential impact and significance of the research.
   - *(iii) Timeline:* Project schedule and key milestones.
   - *(iv) Ethics and Safety:*
     - o Ethical considerations and approvals
     - o Safety protocols and risk management
7. **Bibliography:**
   - o Supporting documents and materials
   - o Additional information relevant to the proposal.

Note: The above specific headings and sections may vary depending on the discipline or institutional requirements.

* **S**-Specific (विशिष्ट/स्पष्ट), **M**-Measurable (मापन योग्य), **A**-Achieable (प्राप्त/पूर्ण करने योग्य), **R**-Realistic/Relatable (वास्तविक/प्रासंगिक), **T**-Time Bound (समयबद्ध)

यहाँ **विशिष्ट** होने से अभिप्राय है कि अनुसंधान–परियोजना के पीछे स्पष्ट निश्चित उद्देश्य और लक्ष्य निर्धारित हों। **मापन योग्य** का अर्थ है कि उद्देश्य को इस प्रकार से परिभाषित किया जाए कि यह सुनिश्चित किया जा सकें की प्रस्तावित उद्देश्य की पूर्ण/आंशिक पूर्ति हो सकती है अथवा नहीं। साथ ही उद्देश्यों की वास्तविक प्राप्ति की सुनिश्चितता की संभावना भी अवलोकनीय हो। अनुसंधान–परियोजना के उद्देश्य को कितने समय में, किस प्रकार से पूर्ण किया जा सकेगा इसका भी कथन कार्ययोजना में होना चाहिए।

अनुसंधान–परियोजना का प्रथम/द्वितीय प्रगति प्रतिवेदन

(CCE Marks:03)

INSTITUTE FOR EXCELLENCE IN HIGHER EDUCATION, BHOPAL (M. P.)

(Confidential Progress Report)

Monthly progress report of the research work done for the period from .... to .... of the research scholar.

1. (a) Name of the research scholar: ....

   (b) Roll No. and Class: ....

2. Subject:
3. Topic of Research Project:
4. Name of the Supervisor:
5. Name of Co-supervisor (if any):

Description of the guidance on the topic	Number of days during which the students have been with the Supervisor for research work
	(It may also indicate the date of leave availed by the candidate during the above period)

Remarks of the supervisor on the work done by the candidate on Topic:

Date: ....
Place: ....

....
(Signature of Head of the Department)

Signature of the Supervisor

Address: Department of ....
Institute for Excellence in Higher Education, Bhopal

Date: ....
Place: ....

अनुसंधान परियोजना का प्रारूप
(Format of Research Project)

I. (i) **Title Page**

- Title of the Research Project
- Researcher's name
- Research Supervisor's name
- Institutional affiliation
- Date

(ii) **Declaration by the Student** *(Annexure-I)*

(iii) **Certificate from the Supervisor** *(Annexure-II)*

(iv) **Forwarding letter of Head of the Department** *(Annexure-III)*

(v) **Acknowledgement**

II. Abstract (approx. 150-250 words)

Summary of the research, including:

- Background and context
- Research question and objectives
- Methodology and Approach
- Key findings and conclusions

III. List of Tables, Figures & Abbreviations Used

- List of tables with page numbers
- List of figures with page numbers
- List of abbreviations used alongwith full-form

IV. Table of Contents

- List of chapters and sections with page numbers

V. Chapter-1: Introduction

- Background and context
- Research problem and questions
- Significance and justification
- Scope and limitations
- Objectives and hypotheses

VI. Chapter-2: Literature Review

- Overview of relevant studies and theories
- Gaps and limitations in current research
- Conceptual framework and research design

VII. Chapter-3: Problem identify/proposed work

VIII. Chapter-4: Methodology

- Research design and approach
- Participants and sampling strategy
- Data collection and analysis methods
- Instruments and materials

IX. Chapter-5: Data Analysis/Algorithm (if required)

X. Chapter-6: Results & Discussions

(a) ***Result:*** *Presentation of findings, including:*

- Data analysis and interpretation
- Figures and tables

(b) **Discussion**

- Interpretation of results
- Implications and significance
- Limitations and future directions

XI. Chapter-7: Conclusion & Future Work

- Summary of key findings
- Implications and recommendations
- Contributions to the field
- Elaborate future prospects of the work done

XII. Bibliography/References

- List of sources cited in the dissertation

XIII. Appendices

- Supporting documents and materials
- Additional information relevant to the research
- Certificates of the seminar/workshops/conferences attended

XIV. Research Paper

- Preparation of research paper and submission of manuscript along with research project.

टीपः

1. विद्यार्थी को सातवें सेमेस्टर की अनुसंधान परियोजना रिपोर्ट बिन्दु क्रमांक **I** से **XIII** शीर्षकों के अंतर्गत तैयार कर जमा करनी होगी।
2. विद्यार्थी को आठवें सेमेस्टर की अनुसंधान परियोजना रिपोर्ट में सभी बिन्दुओं (**I** से **XIV** तक) को सम्मिलित करना होगा।

Annexure-I

DECLARATION BY THE STUDENT

I the undersigned solemnly declare that the report of the research work entitled "..." is based on my own work carried out during the course of my study under the supervision of ...., Professor, **DEPARTMENT OF** ...., Institute for Excellence in Higher Education, Bhopal.

I assert that the statements made and conclusions drawn are an outcome of my research work. I further certify that -

i. The work contained in the thesis is original and has been done by me under the general supervision of my supervisor.

ii. The work has not been submitted to any other Institute for any other degree/diploma/ certificate.

iii. I have followed the guidelines provided by the IEHE in writing my thesis.

iv. Whenever I have used materials (data, theoretical analysis, and text) from other sources, I have given due credit to them by citing in the text of the thesis and giving their details in the references.

v. Whenever I have written materials from other sources, I have put them under quotation marks and given due credit to the sources by citing them and giving required details in the references.

Date:

Place:

(Signature of the Student)

[Name of Student]

Roll No. ....

CERTIFICATE FROM SUPERVISOR

This is to certify that the work incorporated in the Research project entitled "...

...." is a record of research work carried out by .... bearing **Roll Number** .... under my guidance and supervision for the award of degree of **Honours with Research** in the faculty of .... of *Institute for Excellence in Higher Education, Bhopal.*

To the best of my knowledge and belief the Research Work -

i. embodies the work of the candidate himself,

ii. has duly been completed,

iii. fulfills the requirement of the Rule relating to the **Honours with Research** degree of the University and

iv. is up to the desired standard both in respect of contents and language for being referred to the examiners.

....

Signature of the Supervisor

[Name of Supervisor]

Forwarded to Institute for Excellence in Higher Education, Bhopal

....

(Signature of the Head of the Approved Research Centre)

(Seal of Research Centre)

Annexure-III

FORWARDING LETTER OF THE HEAD OF DEPARTMENT

The Research Project "..

...."

Submitted by ...., Roll No. ....

in the **DEPARTMENT** of .... is forwarded

to the **Institute for Excellence in Higher Education, Bhopal.**

....

(Signature of Head of Department)

(Seal of Research Centre)